प्रयोगोनी पगदंडी पर

—हरिवल्लभ भायाणी

सात 'सुख'

सायणकृत 'माधवीय धातुवृत्ति'मां बोधिन्यास नामना वैयाकरणनो मत नोंध्यो छे के 'साति' धातु सुखवाचक छे अने ए मात्र पाणिनिसूत्रमां ज मळे छे (एटले के सौत्र धातु छे)। पाणिनिए ए धातु परथी 'सातय' एवुं कृदन्त रूप बने छे एम कह्युं छे (३, १, १३८). कातंत्र व्याकरणमां पण ए धातुनो निर्देश छे। (जुओ 'बोधिन्यास ; एक अप्रसिद्ध वैयाकरण', 'सामीप्य' १२,२ जु. स. १९९५, पृ. ३६).

मोनिअर विलिअम्झना कोशमां 'साति' ने बदले 'सात्' एवुं धातुरूप आप्युं छे, अने 'सात'='सुख' अने 'सातय' ए साधित रूप आप्यां छे। हेमचंद्राचार्यना 'अभिधान-चिन्तामणि'मां सुखवाचक शब्दोनां 'सात' आप्यो छे (पद्यांक १३७०)। संपादके 'शात' एवो रूपभेद पण आप्यो छे. प्राकृतमां 'साय' शब्द सुखवाचक छे अने ते जैन आगम साहित्यमां वपरायो छे।

जैन दर्शना सैद्धान्तिक ग्रंथ 'तत्त्वार्थाधिगम-सूत्र'मां कर्मना विविध प्रकारोमां 'सद्वेद्य' = (सातावेद्य) अने 'असद्वेद्य' (=असातावेद्य) गणावेल छे. पहेलानो अर्थ 'जेने लीधे सुख अनुभवाय' अने बीजानो अर्थ 'जेने लीधे दु:ख अनुभवाय' एवो छे। आजे पण जैनोमां 'शाता छे', 'शातामां छे' एवा प्रयोग सामान्य भाषाव्यवहारमां छे।

आम जे धातु के तेमांथी साधित शब्दनो प्रयोग अन्यथा संस्कृत साहित्यमांथी नथी मळतो ते जैन परंपरामां प्राकृतमां जळवायो छे. आथी ए धातुनी अने प्राकृत प्रयोगनी प्रमाणभूतता पण स्थपाय छे, अने धातुपाठना जे धातुओनो प्रयोग उपलब्ध संस्कृत साहित्यमांथी नथी मळतो तेमनो आधार प्राकृत साहित्यमांथी मळी रहेतो होवानुं आथी एक वधु उदाहरण आपणने मळे छे, तथा एवा धातुओ वैयाकरणोए कृत्रिम बनावी काढ्या छे ए मतनुं निरसन थाय छे. आ पहेलां में आना ज एक बीजा उदाहरण तरफ ध्यान दोर्युं छे। 'आड्वल्' एवो सोपसर्ग, 'ड्वल्' धातु गुजराती वगेरेमां मळती सामग्रीने आधारे प्रमाणभूत ठरे छे अने 'ट्वल्' के 'टल्' धातुओथी ए जुदो छे. जुओ 'Notes on Some Prakrit Words' ('निर्ग्रन्थ', १, १९९६, पृ. २५-३२) ए लेखमां पृ. २७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्षेपणी, अरित्र

१. क्षेपणी

१. 'नामलिंगानुशासन' (अमरकोश), 'अभिधान-चिन्तामणि' जेवा परंपरागत शब्दकोशोमां सं. **क्षेपणी** शब्द **नौकादंड** एटले के 'हलेसुं'ना अर्थमां आप्यो छे। (अमर० १०,१३, अभि० ८७७) । टर्नरना भारतीय-आर्य भाषाओना तुलनात्मक कोशमां आमांथी निष्पन्न हिंदी, **खेवनी** आपवा उपरांत सं. **क्षेपयति, क्षेप, क्षेप्य, क्षेपक** ए शब्दरूपोमांथी ऊतरी आवेला हिंदी वगेरेना **खेवना** वगेरे, बंगाळी वगेरेना **खेया** वगेरे, पंजाबी **खेवा**, वगेरे, हिन्दी **खेवैया** वगेरे 'नाव', 'नाव चलाववी', 'नाव चलावनार' वगेरे अर्थोमां नोंध्या छे (टर्नर, क्रमांक ३७३८ थी ३७४२) ।

२. अरित्र

२. सं. **अरित्र**ना अर्थनी बाबतमां मतभेद (कदाच अर्थपरिवर्तन के कशीक गरबड) छे । 'अमरकोश'मां (१०,१३) तथा 'अभिधान-चिन्तामणि'मां (८७९) तेनो 'सुकान' एवो अर्थ आप्यो छे । परंतु मोनिअर विलिअम्झना संस्कृत कोश अनुसार 'ऋग्वेद' आदि वैदिक साहित्यमां तेम ज पाणिनिनी 'अष्टाध्यायी'मां तेनो 'हलेसुं' ए अर्थमां प्रयोग छे । 'आचारांग-सूत्र'मां (परिच्छेद ४७९) पण **अलित्त** (पाठांतर **आलित्त**-पासम.मां आ बंने शब्दरूपो 'आचारांग'ना संदर्भ साथे 'हलेसुं'ना अर्थमां आप्यां छे, परंतु **अरित्र** 'धर्मविधिप्रकरण'ना संदर्भ साथे 'सुकान'ना अर्थमां आप्यो छे). जंबूविजयजीना संपादनमां आपेल 'चूर्णि'ना संदर्भोमां पण लांबाटूंका हलेसाना तथा सुकान वगेरेना वाचक शब्दोमां 'अलित्त' मळे छे. अर्धमागधीनी लाक्षणिकता धरावता मूळना 'र्' > 'ल्' एवा परिवर्तनवाळा शब्दोमां **अलित्त** (< **अरित्र**)नो पण समावेश थाय छे ।

हेमचंद्रविजयगणिनी 'अभिधान-चिन्तामणि-नाममाला'नी आवृत्तिमां सार्थ शब्दानुक्रमणिकामां मूळ **अरित्र**नो 'वहाणनुं सुकान' ए अर्थ बराबर कर्यो छे, परंतु अभि.मां अपेल **अरित्र**ना पर्याय **केनिपात** अने **कोटिपात्र**ना 'वहाणनुं सुकान, हलेसुं' एम जे बे अर्थ आप्या छे ते भूल छे । **क्षेपणी**नो अर्थ पण अनवधानथी क्षेप 'निन्दा' आप्यो छे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org